लेखक के दिल से

1. भारत भूमी । हमारी माता है । जिस तरह मॉ । अपने बच्चों को देखकर खुस होती है । उसी तरह भारत मॉ भी । हम बच्चों को । देख देख कर खुस होती है ।
2. भारत भूमी माता के । सहन शीलता का जवाब नही है । भारत माता के भूमी के ऑचल मे । हम । खड्डा खोदें । घर बनाये । मल मूत्र । त्याग करे । उठा पटक । करे । ट्रेन दौडाये । हवाई जहाज दौडाये । वाहन दौडाये । भारत मॉ चुपचाप सहती रहती है ।
3. लेकिन जब हम पेड । काटते है । पहाडों को । नष्ट करते है । जंगली जानवरों को मारते है । जंगल खतम करते है । जलाशयों को नष्ट करते है । तब भारत मॉ को दुख होता है । तब चुपचाप नही सहती । क्योंकी भारत मॉ का बैलेंस बिगडता है ।
4. तब भारत मॉ हमारे सामने । भूकंप । बाढ़ । सुनामी । ज्वालामुखी । अति वर्षा । सूखा । पहाणों का खिसकना । जैसी भयंकर आपदायें । लाकर हमे सचेत करती है ।
5. भारत मॉ खनिज संपदा के रूप मे । हमे कुछ न कुछ । देती रहती है । और खुस होती है ।
6. आज भारत मॉ को । आजाद हुये । 68 वर्ष हो गये । भारत मॉ हर छणं । उन वीर सपूतों को । याद करती है । जिन वीर सपूतों ने । भारत मॉ को । गुलामी की बेडियों से । अपने प्राणों की आहुती देकर । आजाद कराया है ।
7. उन वीर सपूतों पर । मॉ को गर्व है ।
8. लेकिन क्या । हम पर भी । भारत मॉ को गर्व है । तो नही है ।
9. क्योंकी हमने । धन के लालच । और स्वार्थ के बस मे आकर । मॉ के सीने मे । इतने खंजर घुसाये है । कि भारत मॉ । दर्द से कराह रही है ।
10. वही दर्द । लेखक अपने सीने मे । महसूस करता है । जिस तरह भारत मॉ । दर्द से पडप रही है । उसी तरह लेखक भी । तडप रहा है ।
11. क्योंकी लेखक से यह दर्द । बरदास्त नही होता । तो भारत मॉ से यह दर्द । कैसे बरदास्त होता होगा ।
12. लेखक ने । भारत मॉ के सीने से । एक एक खंजर । निकाल बाहर । फेंकने का । कदम उठाया है । ताकि लेखक के सीने का । दर्द कम हो सके । और भारत मॉ । हम पर गर्व कर सके ।
13. भारत मॉ के सभी सपूतों से । लेखक का कर बध्द अनुरोध है । कि भारत मॉ के सीने से । एक एक खंजर । निकाल बाहर फेकने मे । सहयोग दे । ताकि भारत मॉ । हम सबों पर । गर्व कर सके ।

जय विश्व अग्रणी भारत की

मेरा भारत महान

Copy Right Diary Number 3968/2015-CO/L